शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक अगुवाई के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन निर्देशिका

मसीही चरित्र का विकास

पाठ 1: ईश्वरीय चरित्र का महत्व

परिचय

यह पाठ मुलभूत अनुयायीपन मॉडयूल शीर्षक मसीही चरित्र का विकास का भाग है। जब मसीही लोग असफल हो जाते हैं और सेवकाई टुट जाती है, यह अक्सर अगुवें में चरित्र की कमी के कारण होता है। एक मसीही अगुवे को चरित्र के विकास को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि शिष्यता के लिए हमें मसीह के समान चरित्र में बढ़ने की आवश्यकता है। यह मॉडयूल कई मसीही चरित्र की जांच करेगी जो कि एक सेवक अगुवापन के विकास के लिए ज़रुरी है। हम देखेंगे कि इन चरित्रों के बारे में बाइबल क्या सिखाती है, और यीशु के उदाहरण और अन्य लोग उसका प्रदर्शन करते हैं। ईश्वरीय चरित्र सभी मसीह के चेलों के जीवन में स्पष्ट रुप से नज़र आना चाहिए, खासतौर पर वे जो दूसरों की अगुवाई करते हैं।

अध्ययन निर्देशिका का प्रयोजन है कि हर कोई स्वयं से विशिष्ट पाठों का गहराई से अध्ययन करें। पाठ का प्रयोग अन्य मुलभूत अनुयायी पाठ्यक्रम जैसे वीडियो और ओडियो रचना के साथ मिलाकर कर सकते हैं, जिसे आप www.dehindi.org प्राप्त कर सकते हैं।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

मसीही चरित्र का विकास

पाठ 1: ईश्वरीय चरित्र का महत्व

किसके बारे में है?

यह पाठ परमेश्वर के चरित्र के महत्व, प्रकृति और विकास को रेखांकित करता है, और कैसे इसकी कमी से हम परमेश्वर की सेवा करने में असफल हो सकते हैं।

ताकि आप जाने

हम जो गुप्त में करते हैं वो ही चरित्र है, जब हम सोचते हैं कि कोई भी हमें नहीं देख रहा। यह हम कौन है उसे परिभाषित करता है; वो ही हमारा असली स्वभाव है। एक अच्छा चरित्र का अर्थ है यीशु के समान बनते जाना– लेकिन हम अभी वहां पहुंचे नहीं हैं। चरित्र निर्माण हमारे पूरे जीवनकाल तक होता रहेगा। मरने के बाद हम अपनी सेवकाई और परिवार को पीछे छोड़ जायेंगे, लेकिन हमारा चरित्र हमेशा याद रहेगा। व्यक्तित्व के अंतर से चरित्र अलग होता है। आप शायद शर्मीले या बहिर्मुखी व्यक्तित्व के है, आप शायद विचारशील या स्वतःस्फूर्त व्यक्तित्व के हो। चरित्र विशेषता प्राकृतिक नहीं है उन्हें सीखने की आवश्यकता होती है। जब हम अपने आपको पवित्रआत्मा के कार्य को समर्पित करते हैं, हमारा चरित्र मसीह के समान बनने लगता है।

शुरुआत

1. 'चरित्र' शब्द का अर्थ आपके लिए क्या है?

2. कौन सी चरित्र विशेषताएं आपने अपने माता–पिता से पाई है? क्या आपके जीवन में ऐसा कोई समय था जब आप किसी को अपना उदाहरण मानते हो (शायद माता–पिता, भाई–बहन या शिक्षक) और उनकी नकल किया करते हो? उसके क्या परिणाम हुए?

अध्ययन

❖ **परमेश्वर का हृदय होना:** परमेश्वर हमारे जैसे लोगों का प्रयोग पृथ्वी में अपने महान योजना के लिए करना चाहते है: लोगों के साथ पुन: मेलमिलाप जो एक समय में उनके शत्रु थे! परमेश्वर के राज्य में एक उपयोगी सेवक बनने के लिए हमें उनका आज्ञाकारी होना है और हृदय में सही सोच होना चाहिए। मसीही लोगों को ईश्वरीय चरित्र का विकास करना चाहिए; यह व्यक्तिगत शिष्यता का एक पहलू है।

➢ **ईश्वरीय चरित्र क्या है?** हम इस बारे में बात कर रहे हैं जब हम 'ईश्वरीय चरित्र' की बात करते हैं:

- ईश्वरीय चरित्र प्रमाणित होता है जब हमारा दृष्टिकोण, हमारी सोच, हमारी नीयत और हमारी अभिलाषा मसीह के समान होती है।
- ईश्वरीय चरित्र का अर्थ सही और गलत में पहचान, नैतिकता और सदाचार के बोध से कही अधिक है। यह बुराई के ऊपर भलाई को चुनना है भले ही वो कितना भी असुविधाजनक हो।
- ईश्वरीय चरित्र परमेश्वर को पहला स्थान देता है, दूसरो को दूसरा स्थान और स्वयं को तीसरा।
- ईश्वरीय चरित्र बाइबल में दिये प्रशंसा के योग्य चरित्र विशेषताओं का प्रतीक है, जिसमें आत्मा के फल भी शामिल है, जो यीशु मसीह के स्वभाव को इस अविश्वासी संसार में प्रदर्शित करता है।
- परमेश्वर की इच्छा है कि हम सब में ईश्वरीय चरित्र हो!

➢ **मसीह के स्वरुप के अनुरुप होना:** जब हम पवित्रिकरण की प्रक्रिया से गुजरते हैं, हम और भी यीशु मसीह के समान बनते जाते हैं। इससे हमें उत्साहित और आनंदित होना चाहिए! यीशु जीवन की परिक्षाओं से बचें नहीं थे, और हम भी नहीं बचेंगे, जब हम उनके मार्ग पर चलेंगे। ये पद हमारे यीशु के समान बनने की परमेश्वर की इच्छा के बारे क्या कहता है?

रोमियों 8:29	
2 कुरिन्थियों 3:18	
रोमियों 12:2	
कुलुस्सियों 3:9–10	

➢ **यीशु मसीह का चरित्र:** यीशु मसीह के समान बनने के लिए हमें और अधिक जानना होगा कि वे कौन थे, और उनका चरित्र कैसा था! हम इसे बाइबल प्रतिदिन पढ़कर

करते है, और प्रार्थना में उनके साथ अच्छा समय बिताकर करते है। दिये गये पदों को पढ़े और चरित्र की विशेषताओं पर विचार–विमर्श कीजिए।

कुलुस्सियों 3:12–15	
1 यूहन्ना 4:8	
गलातियों 5:22–23	
1 कुरिन्थियों 13:4–13	

- यदि कोई पूछे कि यीशु इस संसार में थे तब वे कैसे थे, आप उसका कैसे वर्णन करेंगे? उनका चरित्र कैसा था?

❖ **ईश्वरीय चरित्र का क्यों महत्व है:** अधिकतर लोगों के लिए यह महत्व न रखता हो कि हमारा असली मकसद और नीयत क्या है जब तक कि हम कानुन–व्यवस्था के अधीन है और अपने में रहते हैं। यदि हम कुछ 'बहुत ही गलत' न करें, तब तक संसार की दृष्टि में स्वीकार्य हैं। लेकिन, परमेश्वर चाहते है कि हम मसीह के समान बने। ऐसा क्यों?

- **ईश्वरीय चरित्र का अनंत तक मूल्य है:** जैसे हम एक नई भाषा को सीखने, नए कौशल को पाने, या अपने शरीर को नये कार्य के लिए प्रशिक्षित करने के लिए मेहनत करते हैं, वैसे ही हमें अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए मेहनत करना चाहिए। हमारे चरित्र का अनंतकालीन मूल्य है! हमें 'राजकीय पुजारी' के रुप में परमेश्वर की सदा सर्वदा सेवा करने के लिए बनाया गया है। (पतरस 2:4–12, प्रकाशितवाक्य 5:10)

- **ईश्वरीय चरित्र से हम परमेश्वर के कार्य करने की योग्यता पाते है:** जब परमेश्वर किसी को किसी स्पष्ट रीति से कार्य करने को कहते हैं, वो उस व्यक्ति को बुलाते हैं जिसका हृदय उसके हृदय के करीब है (या जिसका हृदय परमेश्वर के हृदय के पीछे है)। ईश्वरीय चरित्र ध्यान रखता है कि कार्य निरंतर चलता रहे, जो किसी भी पाप या स्वार्थी निर्णय के द्वारा स्थगित न होने पाये। हमारा चरित्र प्रकट करता है कि क्या हम परमेश्वर के अनुसार से या फिर अपने अनुसार से जीवन जीना चाहते हैं। (1 शमूएल 16:7, प्रेरितों 13:22)

- **ईश्वरीय चरित्र का परमेश्वर के आगे दिखावा नहीं किया जा सकताः** परमेश्वर हम सबको न केवल हमारे कार्यो, लेकिन हमारे अंदरुनी जीवन के लिए भी ज़िम्मेदार ठहराते हैं। हम आसानी से लोगों को मूर्ख बना सकते हैं, लेकिन परमेश्वर को नहीं। क्योंकि हमारा हृदय उसके सामने खुला हुआ है, कुछ भी उनकी नज़रों से नहीं बच सकता। यीशु ने अक्सर उन लोगों को डांटा जो पवित्र होने का दिखावा करते थे, लेकिन उन लोगों के हृदय परमेश्वर से दूर थे। यीशु ने उन्हें शापित कहा; जब वे आशिष की उम्मीद कर रहे थे! (लूका 12:2, मत्ती 23:25–26)

- **हमारा चरित्र हमारे भविष्य के चुनावों को निर्धारित करता हैः** हम वही बन जाते है जो हम आदतन करते हैं। हम सदा ईमानदार रहने से सच्चे ठहरते हैं। हम आनंदित केवल तब ही साबित नहीं होते जब समय अच्छा चल रहा होता है, लेकिन हम तब साबित होते है जब मुश्किलों का सामना करते हुए भी हम परमेश्वर के प्रति धन्यवादी रहते हैं। चरित्र ही प्रकट करता है कि हम भविष्य में क्या करेंगे। निर्णय, चुनाव, सोच और वचन हमारे हृदय से बहकर निकलता है। परमेश्वर के द्वारा प्रयोग किये जाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारा चरित्र मसीह के समान हो। (मत्ती 12:35, नीतिवचन 4:23)

- **हमारा चरित्र प्रकट करता है कि हम किसे प्रेम करते हैंः** हम या तो परमेश्वर को और उनकी इच्छा को पहला स्थान देते हैं या फिर अपने आपको ऊंचा करते है। स्वार्थीपन सारी बुराई और चरित्र के ख़ामियों का जड़ है। इससे प्रकट होता है कि हम परमेश्वर से अधिक अपने आपको प्रेम करते हैं; यह अनाज्ञाकारिता और मूर्तिपूजा है। (नीतिवचन 11:20, यूहन्ना 14:15)

- क्या आप अन्य कारण सोच सकते हैं कि क्यों मसीही चरित्र मायने रखता है और क्यों शिष्यता के लिए ये महत्वपूर्ण है?

❖ **सदाचार, नैतिकता और चरित्रः** विश्व का नज़रिया मनुष्य के प्रकृति के बारे में असहमत है– चाहे ये अधिकांशतः अच्छा हो बुराई की क्षमता के साथ या पूर्णतः बुरा हो अच्छाई की क्षमता के साथ। विश्व का नज़रिया और धर्म सदगुण और नैतिकता के बारे में भी मतभेद रखते है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हमें पता होना चाहिए कि उन शब्दों अर्थ क्या है, और हमारे अभिव्यक्ति का माप कहा से आ रहा है।

- **सदाचार** एक अच्छे चरित्र की अभिव्यक्ति है, जिसका सही रुप से प्रयोग किया गया है। वो न तो कम है और न अति है, लेकिन सटीक रुप से मसीह के चरित्र जिसको पाने की हम कोशिश कर रहे है, उसके अनुरुप में है।

- **नैतिकता** अच्छाई और बुराई, भले और दुष्ट की आस्था प्रणाली है। अन्य विश्व विचार है जिनमें कई भिन्न विचार है।

- **चरित्र** एक विकसित प्रतिक्रिया है जो कि सही काम करना है भले ही उसके लिए हमें अपनी इच्छा और आराम का बलिदान देना पड़े। इसके लिए पूरे विचार के साथ कार्य, सोच–समझकर चुनाव करना और अनुशासन की आवश्यकता है। जब हम अपने कार्यो का मूल्यांकन करते हैं, हमें अपने आप से पूछना है कि यदि हम सही और भला कर रहे हैं। हम अपने प्रेरणा का मूल्यांकन करने के लिए कुछ प्रश्नों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे:

  - क्या यह सबसे पहले परमेश्वर के प्रति प्रेम के लिए किया गया है?
  - क्या यह दूसरों के प्रति प्रेम के लिए किया गया है?
  - क्या यह आत्म–नियंत्रण, या फिर स्वार्थ से किया गया है?

❖ **चरित्र कैसे निर्माण होता है:** हम में से कोई भी स्वभाव से सदगुण नहीं है (या सिद्ध चरित्र)। लेकिन हम सही चुनाव करके सदगुणी बन सकते हैं। दूसरी भाषा सीखने के बारे में सोचिए, केवल उसी को विशेषत: प्रयोग करे जब तक की आपका दिमाग केवल उसी में नई भाषा में सोचने न लग जाये, और फिर उसे अपनी मात्र भाषा के ऊपर प्राथमिकता देना। परमेश्वर हम में मसीह के समान चरित्र को बनाना चाहते हैं, और उस प्रक्रिया में हमारी मदद भी करना चाहते हैं। हम परमेश्वर के साथ कार्य कर सकते हैं और उनके प्रशिक्षण को स्वीकार कर सकते हैं जैसे वह हमारे चरित्र को कई तरह से बनाते हैं:

- **चुनाव:** हम कई सौं छोटे–छोटे निर्णय प्रतिदिन लेते हैं– कैसे किसी को प्रतिक्रिया दें जो आपको भड़का रहा है, हम कैसे ट्रैफिक में या बाज़ार में व्यवहार करें, हम कैसे सोचे और कैसे बात करें। परमेश्वर हमें कई अवसर प्रदान करते हैं कि हम सदाचार व्यवहार और उसके चरित्र के रवैये को चुने। हो सकता है कि इसमें कई समय लगे जब तक कि हम उसे सहजता से करने की स्थिति में नहीं पहुंच जाते। हम सदगुणी होना अपने चुनाव के द्वारा करते हैं। दिये गये पद आपको आपके चुनाव और उनके आपके चरित्र पर प्रभाव के बारे में क्या बताते हैं?

लूका 16:10	
यहोशू 16:10	
नीतिवचन 16:9	

- **चुनौतियां:** हमारे संघर्षों और चुनौतियों के द्वारा ही परमेश्वर हमारे चरित्र को बेहतर बनाते हैं। यदि हमने कभी भी मुश्किलों का सामना नहीं किया तो हमारे चरित्र को कभी चुनौती नहीं मिलेगी! समृद्धी के समय में उदार होना कमी–घटी में होने से

ज़्यादा आसान है। सच्चा और साहसी बनना आसान है जब हमें कोई खतरा नहीं है, तब नहीं जब कोई खतरा न हो! सदगुण का कठिन समय में अभ्यास करना ही हमारे अच्छे चरित्र को प्रमाणित करता है। दिये गये पद आपको चुनौतियों के हमारे चरित्र पर प्रभाव के बारे में क्या कहता है?

याकूब 1:2–4	
1 कुरिन्थियों 10:13	
यर्मियाह 12:5	

- **समुदायः** परमेश्वर अन्य लोगों का निरतंर मसीह के समान बनाने में हमारी मदद के लिए प्रयोग करते है। हमारे दोस्त हमारे चरित्र को बेहतर बनाने में मदद या रुकावट डाल सकते हैं–यह हमारे संगति पर निर्भर करता है! हालांकि हमें हमेशा केवल यीशु पर एक सिद्ध उदाहरण के रुप में नज़र लगाये रखना है, लेकिन हम मसीही पुरुष और स्त्री से बहुत कुछ सीख सकते हैं जो यीशु के पीछे हम से अधिक समय से चल रहे है। उसके साथ ही, हमारा चरित्र परिस्थितियों से अधिक उन लोगों के द्वारा विकसित होता है जो अक्सर हमारी परीक्षा और परिक्षण करते हैं। यह सोचना आसान है कि हम कितने दयालु और धीरजी इंसान हैं जब तक कि हम किसी ऐसे इंसान से नहीं मिलते जिसे बहुत ही असुविधाजनक समय में हमारी ज़रुरत पडती है! दिये गये पद हमारे चरित्र के विकास पर समुदाय की भूमिका के बारे में क्या बताता है?

1 यूहन्ना 4:19–21	
फिलिप्पियों 2:3–4	
याकूब 2:14–17	

- **पतित चरित्रों का उदाहरणः** परमेश्वर का वचन नैतिक कहानियों की श्रृंखला या चेतावनी की कथा मात्र नहीं है। बाइबल का प्रत्येक वचन ईश्वरीय प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है, जिसमें में से कुछ कहानियों के बारे में हम सोचने लगते है कि वे यहां है ही क्यों (2 तीमुथियुस 3:16)। निम्नलिखित बाइबल की घटनाएं गलत चुनावों के नतिज़ों को प्रदर्शित करता है। यह अगुवों के पतन का कारण हो सकता है, और जीवन को एक अथाह निराशा की ओर ले जा सकता है।

- **शिमशोनः** परमेश्वर ने शिमशोन को अपने चुने हुए लोगों के शत्रुओं को हराने लिए बुलाया, और शिमशोन को अलौकिक सामर्थ से भर दिया ताकि वो उस कार्य को पूरा कर सके। शिमशोन परमेश्वर के लिए आश्चर्यजनक कार्यो को करने लगा, लेकिन उसने अपना पूरा जीवन परमेश्वर को समर्पित नहीं किया, जो कि उसे करने की आवश्यकता थी।

    - शिमशोन को एक औरत बहलाती है कि वो अपने ताकत का राज़ बता दे और अपना नाज़ीर होने का शपथ तोड़ देता है (न्यायियों 13:7, गिनती 6:6)। औरतें उसकी कमज़ोरी थी, और उसके कारण वो अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाता।
    - शिमशोन की कमज़ोरी उसकी अयोग्यता थी कि वो परमेश्वर की इच्छा के आगे अपनी अभिलाषा को पहले रखता है। शिमशोन के पास काफी साहस था लेकिन उसमें ईमानदारी की कमी थी। शिमशोन घमंडी था और उसने परमेश्वर के अधिकार को अपने जीवन में नहीं पहचाना।
    - परमेश्वर का स्वर्गदूत प्रकट करता है कि शिमशोन 'इस्राएलियों को फिलिस्तियों के हाथों से छुडायेगा' (न्यायियों 13:5), लेकिन उसके जीवनकाल में वे लोग छुडाये नहीं जाते। यदि शिमशोन अपने चरित्र में कमज़ोर नहीं होता तो वो परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर पाता!
    - अंत में, शिमशोन अपने चुनावों को लेकर पछताता है और पूरे दिल से परमेश्वर की इच्छा को पूरे करने को इच्छुक होता है। इस कारण, परमेश्वर उसे आखिरी बार सामर्थ प्रदान करते हैं (न्यायियों 16:28–31)। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके दिल की ये इच्छा उसे विश्वास का पुरुष के रुप में याद करने के योग्य बनाता है (इब्रानियों 11:17, याकूब 2:21)।

    - आप शिमशोन के चरित्र को कैसे संक्षिप्त में बतायेंगे? यदि उसका चरित्र भिन्न होता तो कैसे उसकी कहानी भी भिन्न होती?

- **सुलैमानः** सुलैमान परमेश्वर के द्वारा अद्वितीय बुद्धि का वरदान प्राप्त मनुष्य था, लेकिन उसमें अच्छे चरित्र की कमी थी। उसका पिता, राजा दाऊद जो एक शानदार विरासत छोड़कर गया था, उसके विपरीत सुलैमान की प्रतिष्ठा शर्मनाक है। वो दाऊद और बेतशेबा का दूसरा पुत्र था, और बचपन से ही परमेश्वर द्वारा प्रेम किया गया था। वो मिस्र के फिरौन की बेटी से राजनैतिक गठबंधन के लिए विवाह करता है, लेकिन वो कई औरतों को चाहने की इच्छा को नियंत्रण में नहीं रख पाता। सुलैमान 700 पत्नियां और 300 रखैलों को रखता है, जिसमें परमेश्वर के द्वारा इस्राएलियों को विवाह के लिए मना किये गये कई अन्यजाति से थे। यही औरतें सुलैमान को बहला–फुसलाकर उसके परमेश्वर की भक्ति से अपने झुठे देवताओं और मूर्ति की आराधना करने को भटकाती है।

- सुलैमान विश्वासयोग्य, आत्म–नियंत्रित या नम्र नहीं था। वो अपने अभिलाषाओं को परमेश्वर और उसके पीछे चलने वालों से आगे रखता है। वो अपने सदगुण के अनुसार कार्य नहीं कर रहा था, लेकिन भोग–विलास में अधिक व्यस्त था। यद्यपि, वो कई अच्छे कार्य को अपने राज्य में पूरा करता है जिसमें मंदिर निर्माण, आस–पास के राज्यों के साथ शांति कायम करना और सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और कुछ नीतिवचन और भजनसंहिता को लिखना को शामिल है (1 राजा 3:7–9, 1 राजा 11:1–6, नहेम्याह 13:26)।
- अंत में, वो पश्चाताप् नहीं करता और ना ही परमेश्वर की ओर लौटता है, लेकिन संसारिकता और स्वार्थी लक्ष्यों के पीछे मुड़ जाता है। सुलैमान के पास बुद्धि थी लेकिन दूसरी तरफ उसके पास मज़बूत चरित्र नहीं था।
- आप सुलैमान के चरित्र को कैसे संक्षिप्त में वर्णन कर सकते हैं?

❖ **मसीही के हृदय को समर्पणः** एक अच्छा चरित्र प्रत्येक मसीह के लिए अनिवार्य है– खासतौर पर अगुवों के लिए। ईश्वरीय चरित्र का विकास यीशु के हृदय को समर्पण करना है। यह परमेश्वर के मार्ग और दूसरों की भलाई को अपने से पहला स्थान देना है..

सारांश में

- ❖ मसीही चेलापन बिना मसीही चरित्र के बिना संपूर्ण नहीं है।
- ❖ ईश्वरीय (या मसीही) चरित्र प्रमाणित होता है जब हमारा व्यवहार, सोच, कार्य, नीयत और इच्छा मसीही के समान होते है।
- ❖ ईश्वरीय चरित्र का अंनत तक मूल्य है– और यह इस संसार में हमारे भविष्य के कार्य और आगे आने वाले जीवन में भी हमें योग्यता प्रदान करता है। इसका परमेश्वर के सामने हम दिखावा नहीं कर सकते, और ये हमारे असलियत को प्रकट करता है।
- ❖ चरित्र एक विकसित प्रतिक्रिया है जो कि सही काम करना है भले ही उसके लिए हमें अपनी इच्छा और आराम का बलिदान देना पड़े। इसके लिए पूरे विचार के साथ कार्य, सोच समझकर चुनाव करना और अनुशासन की आवश्यकता है।
- ❖ चरित्र का निर्माण परमेश्वर के द्वारा हमारे चुनाव से होता, चुनौती जिसका सामना हम और हमारा समुदाय करता है। हमें इच्छुक होकर भाग लेना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चुनाव करना चाहिए।
- ❖ जब हमारा मसीही चरित्र विकसित नहीं होता, हम निष्प्रभावी अगुवें बन जाते हैं और परमेश्वर के लिए कम उपयोगी रह जाते हैं। हम प्रभु के द्वारा दिये जाने वाले फल और आशिषों को खो देते हैं।

प्रतिछाया प्रश्न

1. कब आपके जीवन में किसी खास चरित्र की कमी के कारण आप परमेश्वर के कार्य को करने से रह गये? क्या आप किसी को जानते हैं जो सेवकाई में असफल हो गया क्योंकि उसमें परमेश्वर के चरित्र की कमी थी? कैसी परिस्थितियां थी? क्या वे अपने पतन से कुछ सीख पाये?

2. कुछ लोग सोचते है कि हमें 'अपना स्वयं' बने रहना चाहिए, आर यदि अन्य प्रकार से कोशिश किया तो हम बेमान है। क्या आप सहमत है? यदि हम प्रकृति से सदगुणी नहीं है तो क्या सदगुणी होने के लिए प्रयास करना गलत है जब तक की वह हमारा दूसरा स्वभाव नहीं बन जाता?